नवकिरण अवतरण होना चाहिए

कच्चे दूध की महक मन्द मन्द अधरों पर फैली।
मधुकूपों ने खोल हथेली अन्जालि में मुस्कान संजोली।
आप सुमधुर स्वर स्वरित मधुमास के,
आप सुपरिचित सुमन अनुप्रास के,
आपके ऑचल में एक संकल्प होना चाहिए।
आपको अम्बुज का अरुणिम रंग लेकर,
ऋचाओं से सुउच्चरित प्रसंग लेकर,
नेह की नेहिल छुअन से मन भिगोना चाहिए।
गगन का आलोक अमृत हो गया है,
नवकिरण अवतरण होना चाहिए।

शिखर के अधरों पर नदिया की मृदुल मुस्कान उभरी।
कल्पना ज्यों ललित कलि की लेखनी के द्वार उतरी।
आप सागर हैं अधर इतिहास के,
बोलते हैं बोल निश्छल प्यास के,
हृदय में यादों का कल्पवृक्ष उगाना चाहिए।
आपको कान्हा का श्यामल तत्व लेकर,
रुक्मणि का अभ्यर्थना देवत्व लेकर,
क्षितिज पर विठ्ठल की राधा को बुलाना चाहिए।
गगन का आलोक अमृत हो गया है,
नवकिरण अवतरण होना चाहिए।

आमवृक्षों पर उग आये बौर और बौरा गया मन।
मोंगरे का पुष्प महका और गंधिल हो गया तन।
आप मीरा जायसी के पथ समर्थक,
आम्रमंजरियों का प्रतिफल मार्गदर्शक,
गंध कस्तूरी को तुलसी से मिलाना चाहिए।
आपको चंदन-से सपनों को सजाकर,
अर्थवत्ता को मधुर शब्दों में मिलाकर,

अहम की अभिजात्य ग्रन्थी को मिटाना चाहिए।
अनुभूति का यथार्थ गहरा हो गया है,
नवकिरण अवतरण होना चाहिए।

मन बंधे तो भाव मोमित हुई शब्दों की शिलायें।
सूर, मीरा,जायसी लिखने लगे तुलसी कथायें।
आप कवि की कल्पना संकल्प हैं
भाव, भाषा,शैलियों के कल्प हैं,
दीर्ध में लघुशीर्षता को लीन करना चाहिए।
आपको अभिव्यंजना स्वच्छन्द लेकर,
व्यंजना की सुवासित मकरन्द लेकर,
व्याख्या का भावगत विस्तार करना चाहिए।
भ्रांतियॉ का पथ दिवंगत हो गया है
नवकिरण अवतरण होना चाहिए।

डॉ. सुशील गुरू,
७३/बी इन्द्रपुरी भोपाल-२१ मो.९४२७०२७४३०
१६-३-२००८